Name of Scholar : **JYOTI**
Name of Supervisor : PROF. NISAR-UL-HAQ
Department : **POLITICAL SCIENCE**
Title : **RAJIV GANDHI KI VIDESH NEETI: BHARAT-CHEEN SAMBANDH (1984-89)**

राजीव गांधी की विदेश नीति भारत–चीन सम्बन्ध (1984-89)

श्री राजीव गांधी को राजनीतिक क्षमता व अनुभव विरासत में प्राप्त हुई थी। श्री राजीव गांधी के नाना पण्डित जवाहर लाल नेहरू भारतीय विदेश नीति के नीति निर्माता रहे और माता श्रीमती इन्दिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री रही। श्री राजीव गांधी का जन्म देश की प्रमुख राजनीतिज्ञ श्रीमती इन्दिरा गांधी के घर 20 अगस्त 1944 को हुआ। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा देहरादून और उच्च शिक्षा इग्लैण्ड से प्राप्त की तथा शिक्षा पूरी कर स्वदेश लौट कर इन्डियन एयरलाइंस में विमान चालक की नौकरी की। क्योंकि उनकी आरंम्भ से ही राजनीति में रूचि नहीं थी, किन्तु सन् 1980 में उनके छोटे भाई श्री संजय गांधी जो एक कुशल राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ थें उनकी आकस्मिक मृत्यु होने पर अपने नाना व माता की राजनीतिक विरासत को संभालने के लिए उनको राजनीति में उतरना पड़ा। 31 अक्टूबर 1984 में उनकी माता की हत्या के बाद उनको प्रधानमंत्री के रूप में उत्तराधिकारी चुन लिया गया।

श्री राजीव गांधी के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संचालन की यह विशेषता रही कि उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर कार्य करने में विशेष रूची दिखाई। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा के तीन अधिवेशनों को सम्बोधित किया, तीन राष्ट्रीय मण्डलीय सम्मेलनों को सम्बोधित किया, दो गुट निरपेक्ष सम्मेलनों में साझेदारी की तथा वे तीन दक्षेस सम्मेलनों में सम्मिलित हुए तथा इसके अतिरिक्त कई अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में भी अपनी उपस्थिति दी। निःशस्त्रीकरण (Disarmament), उपनिवेशवाद उन्मूलन (Decolonisation), विकास (Development), शांति की कूटनीति (Diplomacy of Peace), अनुदान (Donation) तथा निर्देशन (Direction) सभी शब्द अंग्रेजी के 'डी' से आरम्भ होते है। श्री राजीव गांधी की विदेश नीति की नवीन दिशाएं मुख्यता ''6D'' के समन्वित कार्यक्रम पर आधारित थी। उन्होंने गुटनिरपेक्षता, निःशस्त्रीकरण, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, पर्यावरण, रंगभेद के विरोध और विकासशील देशों की समस्याओं पर भी गहराई से विचार किया।

भारत – चीन सम्बन्धो का व्यापक विश्लेषण करने पर यह तथ्य उभरता है कि सम्बन्धो का प्रारम्भिक काल ''हिन्दी – चीनी भाई – भाई'' का युग रहा है। परन्तु यह युग शीघ्र ही समाप्त हो गया। भारत चीन के सम्बन्धो मे कटुता आने तथा सौहार्दपूर्ण सम्बन्धो का अंत होने लगा जिसके अनेक करण सीमा –विवाद तथा तिब्बत समस्या रही। इसी कटुता से चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण किया तथा 1965 तथा 1971 के भारत पाक युद्ध मे भारत के खिलाफ पाकिस्तान की हर प्रकार से पूर्ण सहायता प्रदान की । इन 15 वर्षो मे भारत –चीन रहितता का काल रहा। 1977 में भारत मे जनता दल की सरकार आने पर दोनों देशों के मध्य सम्बन्धो को नई दिशा प्रदान हुई।

18 –23 दिसम्बर 1988 मे भारत – चीन सम्बन्धो के स्वर्ण युग की सकारात्मक दिशा प्रदान हुई जिसमें दोनों देशों नए सीमा – विवाद तथा तिब्बत समस्या को अलग रखकर सहयोग का नया अध्याय जोड़ा 1991 के बहुपक्षीय समझौते ने दोनों देशो के सम्बन्धो में प्रगाढ़ता ला दी की दोनों देश तिब्बत समस्या और सीमा –विवाद पर काफी नरम रुख अपनाने पर सहमत हो गए। तत्पश्चात् भारत –चीन मे सांस्कृतिक व आर्थिक क्षेत्र मे सहयोग की नई शुरूआत ने दोनों को करीब ला दिया। भारत ने तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग स्वीकार कर लिया ।यद्धपि 1998 मे भारत के द्धारा परमाणु विस्फोटों को लेकर चीन ने भारत की आलोचना कर आक्रमणकारी देश कहा। लेकिन 1999 मे कारगिल युद्ध मे उसने पाकिस्तान पर पीछें हटने का दबाब डालकर भारत की शंका को निर्मूल कर दिया। मई, 2004 सिक्किम को भारत का अभिन्न अंग स्वीकार कर मतभेदों को समाप्त करने की दिशा मे महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है। इसी तरह से वर्तमान सरकार भी चीन के प्रति सम्बन्ध सुधारने के प्रति वचनबद्ध है।

भारत – चीन मे द्धिपक्षीय सम्बन्धो के बाबजूद भी कुछ अनसुलझे मुद्दे तनाव के कारण बनते रहते है। साथ ही तिब्बत मुद्धा, चीन का पाकिस्तान को सहयोग, सम्मुचय सुरक्षा का प्रश्न क्षेत्र, प्रभुत्व स्थापितं आदि। दोनो देशो के मध्य सम्बन्धो मे सुधार की प्रक्रिया मे बाधा बनते है तिब्बत की समस्या प्राचीन समय से वर्तमान तक तनाव का मुद्धा बना है। चीन – पाकिस्तान की मित्रता समुंद्री सुरक्षा व प्राकतिक स्रोत्रों पर आधिपत्य की

प्रतिस्पर्धा भी दोनों देशो मे तनाव को बढ़ती है।

वर्तमान में तनावों के बावजूद भारत –चीन सम्बन्धो मे सुधार हुआ है दोनों देशो ने सर्वोच्च नेतुत्व के स्तर पर विश्वास व्यक्त किया है। एशिया की दोनों महाशक्तियों के मध्य आपसी स्थायी शांतिपूर्ण सम्बन्धो की स्थापना क्षेत्रीय स्थायित्व व शान्ति को बढ़ावा देगी। भारत के प्रधानमन्त्री डा. मनमोहन सिंह के द्धारा जनवरी 2008 मे की गई चीन यात्रा के दौरान यह आपसी सहमति व्यक्त की गई। भारत –चीन सकरात्मक दृष्टीकोण द्धारा आपसी मतभेदों को किनारे कर विश्व शान्ति मे सहयोग प्रदान करेगें। एशिया के आर्थिक विकास के हित मे दोनों देशो मे मध्य मित्रतापूर्ण सम्बन्ध आवश्यक है चीनी राष्ट्रपति हु जिताऊ द्धारा 2006 मे सम्पन्न अपनी भारत यात्रा मे भी दोनों देशो मे आर्थिक विकास, शान्ति स्थापना के प्रयासों पर बल दिया गया उन्होंने अपने भारत यात्रा के दौरान भारत से सहयोग, मित्रता, आपसी विश्वास स्थापित करने पर बल देने का प्रयास किया।

भारत –चीन के मध्य सैनिक क्षेत्र मे सहयोग स्थापित करने के प्रयास आरम्भ किये तथा सैन्य के मध्य संयुक्त अभ्यास करने की इच्छा व्यक्त की है 2007 मे भारत – चीन की सैनिक टुकड़ियों ने संयुक्त रूप सैन्य अभ्यास किया व इसी प्रकार संयुक्त सैन्य अभ्यास चीन मे भी किया गया। यह संयुक्त सैन्य अभ्यास दोनों देशो के विश्वास व विकास के प्रोत्साहान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

चीन के नए राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भी भारत के साथ अपने सम्बन्धों में अपने पूर्व पदाधिकारी हूँ जिन्ताओ द्वारा प्रस्तावित नए पंचशील की धारणा का अनुमोदन किया है नए पंचशील में ये पांच उपाय दोनों देशों के सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है ये पांचों उपाय चीन के भारत के प्रति नए दृष्टिकोण को रेखांकित करते हैंः–

1. भारत–चीन दोनों सामरिक संचार और विचारों के आदान – प्रदान को कायम रखेंगे तथा द्विपक्षीय सम्बन्धों को सही दिशा में ले जाएगें।
2. दोनो देश एक–दूसरे की तुलनात्मक शक्ति का उपयोग करेंगे तथा दोनों के लिए लाभदायक क्षेत्रों जैसे–ढांचा गत सुविधाएं, निवेश तथा अन्य क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत बनाएगें।
3. दोनों देश अपने सांस्कृतिक सम्बन्धों को मजबूत बनाऐंगे तथा आपसी समझ को विकसित करने के साथ दोनों देशों की जनता के मध्य आपसी समझ के विकास का प्रयास करेंगे।
4. दोनों देशों के मध्य बहुपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सामान्य हित के मुद्दों पर सहयोग व समन्वय को आगे बढ़ाएगें जिससे विकासशील देशों के वैध हितों की पूर्ति की जा सके तथा वैश्विक चुनौतियों का सामना किया जा सके।
5. दोनों देश एक–दूसरे की महत्वपूर्ण चिन्ताओं का ध्यान रखेंगे तथा आपसी मतभेदों व समस्याओं का समुचित समाधान करेंगे।

भारत – चीन सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रास्ते से चलकर मतभेद से युद्ध, युद्ध से तनाव शैथिल्य और तनाव से सामान्य सम्बन्धो की ओर आगे बढ़ रहा है। भविष्य मे इसके मजबूत होने की सम्भावना बढ़ गई है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिती मे काफी परिवर्तन हो गया है।

भारत – चीन मे भले ही लोकतन्त्र है परन्तु भारत – चीन के भविष्य मे दोस्ती को देखा जा सकता है सहयोग को नहीं भुलाया जा सकता, फिर भी साथ मिलकर चलने वाली नीति को अपनाया गया है। परन्तु चीन वर्तमान मे विश्व मे अपने को शक्तिशाली मानता है तो निर्यात की दृष्टि मे सर्वोच्च मानता है भले ही चीन के पास ''हार्ड पावर'' है परन्तु विश्व मे चीन अपनी वर्चस्व से बज नहीं आता। चीन भारत का मित्र होते हुए भी प्रतिस्पर्धा बनाये रखता है इससे भारत को सचेत रहना होगा जो भारत के भविष्य के लिया सर्वश्रेष्ठ है।

वर्तमान मे, भले ही चीन शक्ति का प्रदर्शन कर रहा हो परन्तु भविष्य मे भारत परमाणुशक्ति मे शक्तिशाली हो सकता है। सीमा विवाद का मामला भी ज्यों का त्यों बना हुआ है परन्तु भविष्य मे सीमा – विवाद का क्या हो या चीन भी आने वाले वर्षों मे विभाजित हो जाये यह एक समंजस है क्योंकि चीन भी क्षेत्रफल व जनसंख्या के आधार पर बड़ा देश है लोकतन्त्र व धर्म के आधार पर कब विभाजित हो जाये कुछ स्पष्ट नहीं है। चीन भले ही आदर्शवाद को स्वीकार करता हो परन्तु राष्ट्रहित के साथ यथार्थवाद को महत्व प्रदान करता है।